निर्यात की तुलना में 2543.59 मिलियन रुपए के कच्चे चमड़ तथा खालों, बिना तैयार किये चमड़े और तैयार चमड़ा उत्पादों का आयात किया गया। इस प्रकार इन उत्पादों का आयात निर्यात का 6.7% है जिसका मुख्य कारण निर्यात बाजार की बढ़ती हुई मांग को पूरा करना था।

(घ) से (च) कृषि मंत्रालय 8वीं पचवर्षीय योजना के दौरान 10 करोड़ रुपए के परिव्यय से पशुशव उपयोगिता केन्द्रों तथा चर्म निस्त्कचन एककों की स्थापना के लिए राज्यों का सहायता देने की एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना क्रियान्वित कर रहा है।

खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग भी मृत पशुओं की खाल निकालने उनका उपयोग करने के लिए इन योजनाओं को क्रियान्वित कर रहा है। इस योजना के अंतर्गत उपकरण तथा मशीनरी निर्माण-कार्य के लिए 100% सहायता अनुदान दी जाती है और वैद्युत जल, ढुलाई तथा सफाई करने जैसी सुविधाओं के लिए आंशिक रूप से सहायता अनुदान प्रदान की जाती है।

निम्नकोटिकृत मृदा को उर्वर बनाने हेतु जीव-गतिकी

7148. **श्री सोमपाल**: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 8 अप्रैल, 1994 के "इकोनोमिक टाइम्स" में "बायोडाइनेमिक्स टू रिवाइज डीग्रेडिड साइल" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने उसमें वर्णित प्राकृतिक उर्वरकों के माध्यम से कृषि-उत्पादन को बढ़ाने की विधियों के संबंध में कोई अध्ययन किया है, अथवा करने का विचार रखती है;

(ग) यदि हां, तो भारत के पर्यावरण के अनुकूल ऐसी विधियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा कौन-कौन से कदम उठाए जा रहे हैं ;

(घ) इनमें कौन-कौन से प्रयोग सरकार भारतीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मानती है और इस संबंध में क्या ठोस कार्यवाही की जा रही है ; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविंद नेतराम) : (क) जी, हां।

(ख) से (ङ) न्यूजीलैंड में प्रचारित की जा रही बायोडाइनामिक कृषि तकनीकों का अध्ययन करने और भारतीय स्थितियों में इसकी व्यावहारिकता का पता लगाने के लिये कृषि वैज्ञानिकों का एक दल न्यूजीलैंड भेजने का प्रस्ताव है।

उच्च नस्ल के मवेशियों का समाप्त होना

7149. **श्री सोमपाल :**
श्री शारदा महन्ती :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में पाए जाने वाले मवेशियों विशेषकर गायों की कई परम्परागत नस्लें समाप्ति के कगार पर हैं अथवा समाप्त हो चुकी हैं ;

(ख) क्या आलमबादी, बिंगापुरी, खटियालों, पुल्लिकुल्लम और बांगुर नस्लें उस सूची में शामिल हैं ;

(ग) देश में इनके अतिरिक्त कितनी और ऐसी नस्लें हैं जिनका पूर्ण अथवा आंशिक ह्रास हो रहा है ;

(घ) क्या सरकार के पास सभी महत्वपूर्ण गोवंश नस्लों की सूची सहित ऐसा कोई रिकार्ड उपलब्ध है जिसमें उनकी विशेषताओं का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है ;

(ङ) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ;

(च) इन परम्परागत नस्लों के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए सरकार द्वारा क्या-क्या उपाय किए जा रहे हैं ; और